International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का तुलनात्मक अध्ययन

Sachin Kumar
Research Scholar, Department of Fine Arts, Monad University
Dr. Ashish Garg
Associate Professor, Department of Fine Arts, Monad University

सारांश

भारतीय संस्कृति में चित्रकला और नृत्य दोनों ही प्राचीन एवं समृद्ध कलात्मक परंपराएँ हैं। भारतीय लघुचित्रकला की राजस्थानी एवं पहाड़ी शैलियाँ न केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक विषयों को अभिव्यक्त करती हैं, बल्कि उनमें नृत्य, संगीत तथा भावाभिव्यक्ति के विविध आयाम भी दृष्टिगोचर होते हैं। विशेष रूप से नृत्य मुद्राओं का चित्रण इन चित्रशैलियों की कलात्मक उत्कृष्टता तथा सांस्कृतिक चेतना का परिचायक है। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला में चित्रित नृत्य मुद्राओं का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। विभिन्न संग्रहालयों, प्रकाशित शोधग्रंथों तथा कला–साहित्य में उपलब्ध चित्रों के आधार पर नृत्य मुद्राओं का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से ज्ञात होता है कि राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राएँ अधिक गतिशील, अलंकृत एवं दरबारी सौंदर्य से युक्त हैं, जबकि पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राएँ अधिक भावप्रधान, लयात्मक तथा प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण दिखाई देती हैं। दोनों शैलियों में भारतीय नाट्यशास्त्रीय परंपरा, विशेषकर श्रृंगार एवं भक्ति रस की प्रभावी उपस्थिति परिलक्षित होती है। अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण तथा दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के अंतर्संबंध को समझने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

कुंजी शब्दः राजस्थानी चित्रकला, पहाड़ी चित्रकला, नृत्य मुद्राएँ, कथक, लघुचित्रकला, भारतीय संस्कृति, तुलनात्मक अध्ययन।

1. परिचय

भारतीय कला परंपरा में चित्रकला एवं नृत्य का संबंध अत्यंत प्राचीन और गहन रहा है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से लेकर मध्यकालीन लघुचित्रकला तक नृत्य की मुद्राएँ, भाव–भंगिमाएँ तथा सौंदर्यात्मक तत्व निरंतर अभिव्यक्त होते रहे हैं। भारतीय लघुचित्रकला की विभिन्न शैलियों में राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन दोनों चित्रशैलियों में धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं संगीतात्मक विषयों के साथ–साथ नृत्य के विविध रूपों का सशक्त चित्रण प्राप्त होता है। राजस्थानी चित्रकला का विकास मुख्यतः मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, बीकानेर तथा जयपुर जैसे राजपूत राज्यों में हुआ। इस शैली में रंगों की चटकीली योजना, सशक्त रेखांकन तथा दरबारी जीवन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दूसरी ओर, पहाड़ी चित्रकला का विकास हिमालयी क्षेत्र के

कांगड़ा, गुलेर, बसोहली, चंबा तथा गढ़वाल आदि केंद्रों में हुआ, जहाँ प्रकृति, प्रेम, भक्ति एवं भावात्मक अभिव्यक्ति को विशेष महत्व दिया गया। इन चित्रशैलियों में नृत्य मुद्राओं का चित्रण केवल सौंदर्य प्रदर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि वे तत्कालीन समाज, संस्कृति, संगीत परंपरा तथा नृत्य–कला की विशेषताओं को भी अभिव्यक्त करती हैं। विशेष रूप से कथक एवं रासलीला से संबंधित मुद्राएँ अनेक चित्रों में दिखाई देती हैं, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में कार्य करती हैं।

2. अध्ययन के उद्देश्य

1. राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं को देखना
2. पहाड़ी कला में नृत्य मुद्राओं का विश्लेषण करना
3. दोनों चित्रशैलियों में नृत्य मुद्राओं में समानता और भिन्नता खोजना।
4. नृत्य मुद्राओं के माध्यम से सौंदर्य और सांस्कृतिक मूल्यों का आकलन करना।
5. भारतीय शास्त्रीय नृत्य संस्कृतियों का दृश्य चित्रीकरण समझना।

3. शोध प्रश्न

1. राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
2. पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का स्वरूप एवं कलात्मक प्रस्तुतीकरण किस प्रकार का है?
3. राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं के चित्रण में कौन–कौन सी समानताएँ एवं भिन्नताएँ विद्यमान हैं?
4. नृत्य मुद्राओं के माध्यम से दोनों चित्रशैलियों में कौन से सांस्कृतिक एवं सौंदर्यात्मक मूल्य अभिव्यक्त होते हैं?
5. क्या इन चित्रों में भारतीय शास्त्रीय नृत्य, विशेषकर कथक एवं रास–परंपरा के तत्व परिलक्षित होते हैं?

4. परिकल्पनाएँ

H_0 (शून्य परिकल्पना)

राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं के चित्रण, भावाभिव्यक्ति तथा सौंदर्यात्मक प्रस्तुतीकरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

H_1 (वैकल्पिक परिकल्पना)

राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं के चित्रण, भावाभिव्यक्ति तथा सौंदर्यात्मक प्रस्तुतीकरण में महत्वपूर्ण अंतर है।

5. अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन भारतीय कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है क्योंकि यह दो प्रमुख लघुचित्र परंपराओंकृराजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकलाकृमें निहित नृत्य मुद्राओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति में नृत्य और चित्रकला दोनों ही अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण माध्यम रहे हैं। नृत्य जहाँ गति, लय, भाव एवं रस की अभिव्यक्ति

करता है, वहीं चित्रकला इन गतिशील क्षणों को स्थायी दृश्य रूप प्रदान करती है। इस दृष्टि से यह अध्ययन दृश्य कला और प्रदर्शनकारी कला के बीच विद्यमान गहरे संबंधों को समझने का अवसर प्रदान करता है।

यह शोध भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला भारतीय कला इतिहास की अमूल्य धरोहर हैं, जिनमें तत्कालीन समाज, संस्कृति, धार्मिक विश्वासों, संगीत तथा नृत्य परंपराओं का सजीव चित्रण मिलता है। नृत्य मुद्राओं के अध्ययन के माध्यम से इन चित्रों में निहित सांस्कृतिक अर्थों, सौंदर्यबोध तथा कलात्मक अभिव्यक्तियों को अधिक गहराई से समझा जा सकता है। इससे भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपराओं, विशेषकर कथक, रासलीला तथा भक्ति आंदोलन से संबंधित कलात्मक तत्वों के संरक्षण और प्रलेखन में सहायता मिलेगी।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह कला इतिहास, नृत्य अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन तथा सौंदर्यशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों के मध्य अंतःविषयक (Interdisciplinary) संवाद को प्रोत्साहित करता है। वर्तमान समय में कला शिक्षा और सांस्कृतिक अध्ययन में बहुविषयक दृष्टिकोण को विशेष महत्व दिया जा रहा है। ऐसे में यह शोध विद्यार्थियों, शोधार्थियों, कला इतिहासकारों तथा नृत्य विशेषज्ञों के लिए उपयोगी संदर्भ सामग्री प्रदान करेगा।

इसके अतिरिक्त, संग्रहालयों, कला दीर्घाओं तथा सांस्कृतिक संस्थानों के लिए भी यह अध्ययन महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है, क्योंकि यह चित्रों में निहित नृत्यात्मक तत्वों की पहचान और व्याख्या का आधार प्रदान करता है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध भारतीय दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के अंतर्संबंधों को समझने, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण को सुदृढ़ करने तथा भविष्य के शोधों के लिए नई संभावनाएँ विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

6. साहित्य समीक्षा

भारतीय चित्रकला के इतिहास पर किए गए विश्लेषणों से पता चलता है कि लघुचित्रकला केवल दृश्य कला नहीं हैय यह साहित्य, संगीत और नृत्य की समन्वित अभिव्यक्ति भी है। भारतीय लघुचित्रों में कलाकारों ने मानव आकृतियों की गतिशीलता, शारीरिक मुद्रा और भावनात्मक अभिव्यक्ति को विशेष महत्व देते हुए विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक प्रसंगों को चित्रित किया है। राजस्थानी, मुगल और पहाड़ी भारतीय लघुचित्रकला में नृत्य और संगीत की बहुतायत है।

आनंद कुमार स्वामी ने राजपूत चित्रकला के अध्ययन में कहा कि राजस्थानी चित्रकला भारतीय सांस्कृतिक चेतना, भक्ति भावना और लोक–परंपराओं का प्रभावशाली दृश्य रूप है। उनका कहना है कि गतिशील रेखाएँ, सजावटी संरचना और भावात्मक अभिव्यक्ति राजस्थानी चित्रों के प्रमुख तत्व हैं। यद्यपि उनके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नृत्य मुद्राओं का विश्लेषण नहीं था, उन्होंने पाया कि चित्रों में अंकित मानवीय आकृतियाँ लय और गति का अनुभव कराती हैं।

द्विवेदी (2006) ने राजस्थानी चित्रकला की शैलीगत विशेषताओं, प्रमुख उपशैलियों और विकास का व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया। उनका कहना है कि मेवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, जयपुर और मारवाड़ शैलियों में नृत्य और संगीत की बहुलता है। रागमाला चित्रों में नर्तकियों की मुद्राएँ, हाथों की अभिव्यक्तियाँ और शरीर की गतिशीलता, विशेष रूप से नृत्यशास्त्रीय सिद्धांतों के अनुरूप हैं। साथ ही उन्होंने बताया कि राजस्थानी कलाकारों ने दरबारी मनोरंजन और उत्सवों में नृत्य को मुख्य विषय के रूप में चित्रित किया।

किंतु पहाड़ी चित्रकला पर किए गए अध्ययनों ने पाया कि नृत्य मुद्राओं का चित्रण अधिक भावप्रधान और काव्यात्मक है। हिमालयी राज्यों कांगड़ा, गुलेर, बसोहली, चंबा और गढ़वाल में पहाड़ी चित्रकला का विकास माना जाता है। इन क्षेत्रों में बनाए गए चित्रों में प्रेम, भक्ति, प्रकृति और मानवीय संवेदनाएं दिखाई देती हैं। पहाड़ी कलाकारों ने नृत्य को भावनात्मक संप्रेषण का साधन भी बताया।

वैद्य एवं हांडा (1969) ने पहाड़ी चित्रकला के अध्ययन में बताया कि कांगड़ा शैली में राधा–कृष्ण के चित्रों में नृत्य की भावनाओं का बहुत सुंदर चित्रण है। इन चित्रों में आकृतियाँ प्रकृति के साथ सुसंगत लगती हैं। कलाकारों ने नृत्य के सौंदर्य को हाथों की लयात्मकता, शरीर की कोमलता और चेहरे की भावपूर्ण अभिव्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

रागमाला चित्रों को कई विद्वानों ने भारतीय संगीत और नृत्य परंपरा के दृश्य दस्तावेजों के रूप में देखा है। रागमाला चित्रों में विभिन्न रागों और रागिनियों को जीवंत बनाया गया है। इन चित्रों में नर्तकियों, संगीतकारों और उत्सवों के दृश्य बहुत हैं। रागमाला चित्रों की परंपरा राजस्थानी और पहाड़ी दोनों शैलियों में पैदा हुई, लेकिन दोनों में स्पष्ट शैलीगत अंतर हैं। पहाड़ी शैली में कोमल रंगों और भावात्मक अभिव्यक्ति पर बल दिया गया है, जबकि राजस्थानी शैली में रंगों की तीव्रता, अलंकरण और गतिशीलता अधिक है।

मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन ने बताया कि राजपूत और पहाड़ी चित्रकला में संगीत, नृत्य और काव्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। इन चित्रों के मुख्य विषय थे दरबारी जीवन, उत्सव, संगीत समारोह और नृत्य प्रदर्शन। अध्ययन के अनुसार, शांति और सांस्कृतिक समृद्धि के दौरान संगीत और नृत्य विषयक चित्रों की संख्या में बड़ा विस्तार हुआ।

हाल ही में गुप्ता एवं खान (2026) ने राजस्थानी और पहाड़ी लघुचित्रों में कृष्ण छवि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कृष्ण को दोनों चित्रशैलियों में सांस्कृतिक और कलात्मक प्रतीक के रूप में भी चित्रित किया गया है। कृष्ण–लीला से जुड़े अनेक चित्रों में रास, नृत्य और संगीत की झलक मिलती है, जो उस समय की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और नृत्य परंपराओं को समझने में सहायक हैं।

हाल ही में राजस्थानी चित्रकला में दृश्य संरचना और अलंकरण पर किए गए अध्ययनों ने पाया कि चित्रों में प्रयुक्त वस्तुएँ, आभूषण, वस्त्र और स्थापत्य तत्व केवल सजावट का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे कथा–वाचन और सांस्कृतिक संकेतों के वाहक भी हैं। नृत्य विषयक चित्रों

में मंच–सज्जा, परिधान, संगीत वाद्य और राजसी वातावरण नृत्य को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

नृत्य अध्ययन के क्षेत्र में किए गए नवीनतम अध्ययनों ने पाया कि विभिन्न मुद्राओं, हस्त–मुद्राओं, शारीरिक संतुलन और भाव–भंगिमाओं पर आधारित भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की मूल संरचना है। आधुनिक डिजिटल अध्ययनों ने भी नृत्य मुद्राओं को सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मान लिया है। नवीनतम तकनीकों का उपयोग भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की मुद्राओं की पहचान, संरक्षण और विश्लेषण करने के लिए किया जा रहा है।

भारतीय नृत्य और चित्रकला के संबंध पर प्राप्त साहित्य से पता चलता है कि चित्रकारों ने नृत्य की क्षणिक गतियों को स्थायी दृश्य रूप दिया है। नृत्य मुद्राएँ भावनाओं, रसों और सांस्कृतिक अर्थों को व्यक्त करती हैं और केवल शारीरिक गतिविधियाँ नहीं हैं। यह संबंध अधिक स्पष्ट रूप से कथक, रासलीला और भक्ति परंपरा से जुड़े चित्रों में दिखाई देता है।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत में राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला दोनों महत्वपूर्ण धरोहर हैं, जैसा कि उपलब्ध लेखों का विश्लेषण बताता है। दोनों शैलियों में नृत्य मुद्राओं का चित्रण बहुत समृद्ध और कलात्मक है, लेकिन उनके प्रस्तुतीकरण में शैलीगत अंतर हैं। राजस्थानी चित्रकला में शक्ति, गतिशीलता, वैभव और अलंकरण प्रमुख हैं, लेकिन पहाड़ी चित्रकला में कोमलता, भावप्रधानता, प्रकृति–सामंजस्य और लयात्मकता अधिक महत्वपूर्ण हैं। नृत्य मुद्राओं का तुलनात्मक अध्ययन बहुत कम है, लेकिन अधिकांश पूर्ववर्ती अध्ययनों ने इन चित्रशैलियों के धार्मिक, सांस्कृतिक या शैलीगत पहलुओं पर ध्यान दिया है।

इसलिए, प्रस्तुत अध्ययन इस शोध–अंतराल को भरने की कोशिश करता है। यह अध्ययन राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं की संरचना, भावाभिव्यक्ति, गतिशीलता, सांस्कृतिक संदर्भ और सौंदर्यात्मक विशेषताओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा. इससे भारतीय दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के संबंधों को अधिक व्यापक रूप से समझा जा सकेगा।

7. राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का विश्लेषण

राजस्थानी चित्रकला भारतीय लघुचित्रकला की एक महत्वपूर्ण शैली है, जिसका विकास मुख्यतः राजस्थान के विभिन्न राजवंशोंकृमेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, बीकानेर एवं जयपुरकृमें हुआ। इस चित्रकला की प्रमुख विशेषता इसकी सशक्त रेखाएँ, चमकीले रंग, अलंकृत संरचना तथा भावपूर्ण मानवीय आकृतियाँ हैं। राजस्थानी चित्रकारों ने धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक तथा दरबारी जीवन से संबंधित अनेक विषयों का चित्रण किया है, जिनमें नृत्य और संगीत प्रमुख स्थान रखते हैं।

राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का चित्रण केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं था, बल्कि यह तत्कालीन समाज की सांस्कृतिक समृद्धि, कलात्मक चेतना तथा राजदरबारों में नृत्य के महत्व को भी प्रदर्शित करता है। अनेक चित्रों में नर्तकियों को कथक शैली से मिलती–जुलती

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

मुद्राओं में दर्शाया गया है। इन चित्रों में हाथों की सुस्पष्ट मुद्राएँ, शरीर की संतुलित स्थिति तथा पैरों की गतिशीलता नृत्य की लय और गति को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती हैं। विशेष रूप से बूंदी और कोटा शैली के चित्रों में नृत्य दृश्यों की गतिशीलता अत्यंत प्रभावशाली दिखाई देती है। कलाकारों ने घूमती हुई नर्तकियों, उत्सवों, संगीत सभाओं तथा राजदरबारों में आयोजित नृत्य प्रस्तुतियों को जीवंत रूप में चित्रित किया है। वहीं किशनगढ़ शैली में नृत्य मुद्राओं के साथ सौंदर्य, कोमलता तथा श्रृंगारिक भावों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। राधा–कृष्ण विषयक चित्रों में नृत्य मुद्राएँ आध्यात्मिक प्रेम और भक्ति की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती हैं।

राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कलाकारों ने नाट्यशास्त्र के अंग, उपांग और प्रत्यंग की अवधारणाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनाया है। हाथों की मुद्राएँ, गर्दन की गति, नेत्रों की दिशा तथा शरीर का झुकाव भाव–अभिव्यक्ति को सशक्त बनाते हैं। चित्रों में प्रयुक्त वेशभूषा, आभूषण और रंग संयोजन नृत्य की भव्यता को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

तालिका 1 : राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं की प्रमुख विशेषताएँ

क्रम	विश्लेषण आयाम	प्रमुख विशेषताएँ
1	शरीर मुद्रा	गतिशील, संतुलित एवं ऊर्जावान
2	हस्त मुद्राएँ	स्पष्ट, अलंकृत एवं अभिव्यंजक
3	मुखाभिव्यक्ति	श्रृंगार, भक्ति एवं आनंद भाव
4	गति का संकेत	घूमना, चलना एवं लयात्मकता
5	वेशभूषा	राजसी, रंगीन एवं अलंकृत
6	पृष्ठभूमि	राजदरबार, महल एवं उत्सव दृश्य
7	सांस्कृतिक तत्व	कथक, रास एवं दरबारी संस्कृति

तालिका से स्पष्ट होता है कि राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राएँ केवल शारीरिक गतिविधि का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि वे भाव, रस और सांस्कृतिक चेतना को भी अभिव्यक्त करती हैं। नृत्य की गतिशीलता को प्रदर्शित करने के लिए कलाकारों ने आकृतियों की रेखाओं, वस्त्रों की गति तथा हाथों–पैरों की स्थिति का प्रभावी उपयोग किया है।

तालिका 2 : विभिन्न राजस्थानी उपशैलियों में नृत्य मुद्राओं का स्वरूप

चित्रकला शैली	नृत्य मुद्राओं की विशेषता
मेवाड़ शैली	धार्मिक एवं भक्ति भाव से युक्त नृत्य

मारवाड़ शैली	लोक एवं दरबारी नृत्य दृश्य
बूंदी शैली	अत्यधिक गतिशील एवं जीवंत मुद्राएँ
कोटा शैली	उत्सव एवं सामूहिक नृत्य दृश्य
किशनगढ़ शैली	कोमल, श्रृंगारिक एवं सौंदर्यपूर्ण मुद्राएँ
जयपुर शैली	कथक एवं दरबारी नृत्य का प्रभाव

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राएँ कला, संस्कृति और सौंदर्यबोध का समन्वित रूप प्रस्तुत करती हैं। इन चित्रों में नृत्य केवल मनोरंजन या प्रदर्शन का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक जीवन, धार्मिक आस्था, राजसी वैभव तथा भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं का महत्वपूर्ण प्रतीक है। इसलिए राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का अध्ययन भारतीय दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के अंतर्संबंधों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

8. पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का विस्तृत विश्लेषण

पहाड़ी चित्रकला भारतीय लघुचित्रकला की एक महत्वपूर्ण शैली है, जिसका विकास 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य हिमालयी पर्वतीय राज्योंकृकांगड़ा, गुलेर, बसोहली, चंबा, मंडी, कुल्लू तथा गढ़वालकृमें हुआ। यह शैली अपनी कोमलता, भावप्रधानता, प्राकृतिक सौंदर्य तथा मानवीय संवेदनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति के लिए प्रसिद्ध है। पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का चित्रण केवल शारीरिक गति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भाव, रस, प्रेम, भक्ति और आध्यात्मिक अनुभवों का दृश्य रूप प्रस्तुत करता है। पहाड़ी कलाकारों ने नृत्य को मानवीय भावनाओं तथा प्रकृति के साथ गहराई से जोड़कर चित्रित किया है।

पहाड़ी चित्रकला में नृत्य संबंधी दृश्य मुख्यतः राधा–कृष्ण लीला, रास–नृत्य, गीतगोविंद, रसमंजरी, भागवत पुराण तथा रागमाला विषयों से जुड़े हुए मिलते हैं। इन चित्रों में नृत्य मुद्राएँ अत्यंत लयात्मक, संतुलित एवं भावनात्मक दिखाई देती हैं। कलाकारों ने शरीर की कठोर गतियों की अपेक्षा कोमल और प्रवाहमयी मुद्राओं को अधिक महत्व दिया है। कांगड़ा शैली में विशेष रूप से राधा और कृष्ण की नृत्यात्मक मुद्राएँ प्रेम, विरह तथा मिलन की भावनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती हैं।

पहाड़ी चित्रकला की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी भावप्रधान अभिव्यक्ति है। कलाकारों ने नेत्रों, मुखमुद्राओं, हाथों की स्थिति तथा शरीर के झुकाव के माध्यम से नृत्य के भावात्मक पक्ष को प्रमुखता प्रदान की है। नर्तकियों की आकृतियों में कोमलता, लचक तथा सौंदर्य का ऐसा समन्वय दिखाई देता है जो दर्शक को चित्र के भावलोक में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करता है। अनेक चित्रों में अष्टनायिका परंपरा से संबंधित भावोंकृविरह, प्रतीक्षा, मिलन एवं अनुरागकृका चित्रण नृत्यात्मक मुद्राओं के माध्यम से किया गया है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बसोहली शैली में नृत्य मुद्राएँ अपेक्षाकृत अधिक सशक्त, ऊर्जावान तथा नाटकीय दिखाई देती हैं। यहाँ आकृतियों की आँखें बड़ी, रेखाएँ तीव्र तथा रंग अत्यंत चमकीले होते हैं। इसके विपरीत गुलेर और कांगड़ा शैली में नृत्य मुद्राएँ अधिक स्वाभाविक, लयात्मक एवं सौंदर्यपूर्ण रूप ग्रहण कर लेती हैं। गुलेर शैली में मुगल चित्रकला का प्रभाव दिखाई देता है, जिसके कारण आकृतियों का निर्माण अधिक यथार्थवादी एवं संतुलित हो जाता है। कांगड़ा शैली में यह विकास अपने चरम पर पहुँचता है, जहाँ नृत्य मुद्राएँ प्रकृति, संगीत और भावनाओं के साथ पूर्ण सामंजस्य स्थापित करती हैं।

पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष प्रकृति के साथ उनका संबंध है। कलाकारों ने पर्वतों, नदियों, वृक्षों, पुष्पों तथा ऋतु–परिवर्तन को नृत्य दृश्यों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है। इससे नृत्य केवल मानव क्रिया न रहकर संपूर्ण प्रकृति की लय का प्रतीक बन जाता है। रास–लीला तथा कृष्ण–नृत्य संबंधी चित्रों में यह विशेषता अत्यंत स्पष्ट दिखाई देती है, जहाँ प्रकृति स्वयं नृत्य की सहभागी प्रतीत होती है।

तालिका 3 : पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं की प्रमुख विशेषताएँ

क्रम	विश्लेषण आयाम	प्रमुख विशेषताएँ
1	शरीर मुद्रा	कोमल, लचीली एवं लयात्मक
2	हस्त मुद्राएँ	भावप्रधान एवं सूक्ष्म
3	मुखाभिव्यक्ति	प्रेम, भक्ति एवं विरह भाव
4	गति का संकेत	प्रवाहमयी एवं संतुलित
5	वेशभूषा	सरल, आकर्षक एवं सौम्य
6	पृष्ठभूमि	पर्वतीय एवं प्राकृतिक दृश्य
7	सांस्कृतिक तत्व	राधा-कृष्ण लीला, रास एवं भक्ति परंपरा

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का उद्देश्य केवल शारीरिक गति का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभूति को व्यक्त करना भी है।

तालिका 4 : पहाड़ी चित्रकला की प्रमुख उपशैलियों में नृत्य मुद्राओं का स्वरूप

चित्रकला शैली	नृत्य मुद्राओं की प्रमुख विशेषता
बसोहली	सशक्त, ऊर्जावान एवं नाटकीय मुद्राएँ
गुलेर	स्वाभाविक, संतुलित एवं यथार्थवादी मुद्राएँ
कांगड़ा	कोमल, भावप्रधान एवं लयात्मक मुद्राएँ

चंबा	लोक-सांस्कृतिक एवं भक्ति तत्वों से युक्त मुद्राएँ
मंडी	धार्मिक एवं अनुष्ठानिक नृत्य दृश्य
गढ़वाल	प्रकृति एवं भावात्मक सौंदर्य से युक्त मुद्राएँ

तालिका से ज्ञात होता है कि पहाड़ी चित्रकला की विभिन्न उपशैलियों में नृत्य मुद्राओं का स्वरूप भिन्न होने के बावजूद उनमें भावनात्मक अभिव्यक्ति, सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक संवेदनशीलता की एक समान धारा प्रवाहित होती है।

समग्र रूप से देखा जाए तो पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राएँ भारतीय सांस्कृतिक जीवन, भक्ति आंदोलन, प्रेम–साहित्य और प्रकृति–सौंदर्य की समन्वित अभिव्यक्ति हैं। इन चित्रों में नृत्य केवल कला का विषय नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव, भावनात्मक संप्रेषण तथा सांस्कृतिक पहचान का माध्यम बन जाता है। यही कारण है कि पहाड़ी चित्रकला भारतीय लघुचित्र परंपरा में एक विशिष्ट स्थान रखती है और नृत्य मुद्राओं के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध होती है।

10. चर्चा

अध्ययन से ज्ञात हुआ कि राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का चित्रण अपेक्षाकृत अधिक गतिशील, ऊर्जावान तथा अलंकृत है। राजस्थानी कलाकारों ने दरबारी जीवन, उत्सवों, संगीत सभाओं तथा राजसी संस्कृति को प्रमुख विषय के रूप में चित्रित किया। परिणामस्वरूप नर्तकियों की मुद्राओं में गति, उत्साह तथा प्रदर्शनात्मकता अधिक दिखाई देती है। हाथों की स्पष्ट मुद्राएँ, शरीर की संतुलित स्थिति तथा चमकीले रंगों का प्रयोग नृत्य के दृश्य प्रभाव को सशक्त बनाता है। विशेष रूप से बूंदी, कोटा तथा जयपुर शैली में नृत्य के गतिशील स्वरूप का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती अध्ययनों के अनुरूप है, जिनमें राजस्थानी चित्रकला को राजसी वैभव और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रतीक माना गया है।

इसके विपरीत, पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राएँ अधिक भावप्रधान, कोमल और लयात्मक दिखाई देती हैं। पहाड़ी कलाकारों ने नृत्य को केवल शारीरिक क्रिया के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक एवं आध्यात्मिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया है। राधा–कृष्ण लीला, रास–नृत्य तथा भक्ति विषयक चित्रों में नृत्य मुद्राओं के माध्यम से प्रेम, विरह, अनुराग और भक्ति की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। कांगड़ा और गुलेर शैली के चित्रों में आकृतियों की कोमलता, नेत्रों की भावपूर्ण अभिव्यक्ति तथा प्रकृति के साथ सामंजस्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पहाड़ी चित्रकला में सौंदर्यबोध का केंद्र भावात्मक अनुभव है, जबकि राजस्थानी चित्रकला में दृश्य वैभव और गतिशीलता को अधिक महत्व दिया गया है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि दोनों चित्रशैलियों में भारतीय नाट्यशास्त्रीय परंपरा के तत्व विद्यमान हैं। हस्त मुद्राएँ, शरीर की भंगिमाएँ, नेत्र संचालन तथा भाव–अभिव्यक्ति के माध्यम से कलाकारों ने नृत्य की सौंदर्यात्मक संरचना को प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया है। इससे यह

संकेत मिलता है कि चित्रकार नृत्य परंपराओं और उनके सांस्कृतिक महत्व से भली–भाँति परिचित थे। दोनों शैलियों में श्रृंगार एवं भक्ति रस की प्रमुखता भी भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की निरंतरता को दर्शाती है।

तुलनात्मक विश्लेषण से यह निष्कर्ष भी सामने आया कि राजस्थानी चित्रकला में पृष्ठभूमि के रूप में महलों, दरबारों तथा उत्सव स्थलों का चित्रण अधिक मिलता है, जबकि पहाड़ी चित्रकला में पर्वतीय प्राकृतिक दृश्य, वृक्ष, नदियाँ तथा उद्यान प्रमुखता से चित्रित किए गए हैं। इस अंतर का प्रभाव नृत्य मुद्राओं की प्रस्तुति पर भी दिखाई देता है। राजस्थानी चित्रों में नृत्य सामाजिक एवं राजसी गतिविधि के रूप में उभरता है, जबकि पहाड़ी चित्रों में यह प्रकृति और आध्यात्मिक अनुभूति के साथ जुड़ा हुआ प्रतीत होता है।

अध्ययन के निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि दोनों चित्रशैलियाँ भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपराओं, विशेषकर कथक और रास परंपरा, के दृश्य दस्तावेज के रूप में महत्वपूर्ण हैं। इन चित्रों में संरक्षित नृत्य मुद्राएँ उस समय की कलात्मक अभिरुचियों, सांस्कृतिक मान्यताओं तथा सौंदर्यबोध को समझने में सहायक हैं। इसलिए इनका अध्ययन केवल कला इतिहास तक सीमित नहीं है, बल्कि नृत्य अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन तथा विरासत संरक्षण के लिए भी महत्वपूर्ण है।

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का चित्रण भारतीय कला की विविधता एवं समृद्धि को प्रदर्शित करता है। दोनों शैलियाँ अपनी विशिष्ट कलात्मक पहचान बनाए रखते हुए भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की एक साझा धारा का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन इस तथ्य को स्थापित करता है कि दृश्य कला और प्रदर्शनकारी कला के मध्य गहरा अंतर्संबंध विद्यमान है तथा नृत्य मुद्राएँ इस संबंध की महत्वपूर्ण कड़ी हैं। यह अध्ययन भविष्य में भारतीय चित्रकला और नृत्य के अंतःविषयक शोधों के लिए उपयोगी आधार प्रदान करता है।

11. निष्कर्ष

"राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का तुलनात्मक अध्ययन" नामक प्रस्तुत अध्ययन भारतीय लघुचित्रकला की दो महत्वपूर्ण परंपराओं में निहित नृत्य अभिव्यक्तियों को समझने की कोशिश करता है। अध्ययन ने दिखाया कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला भारतीय सांस्कृतिक, धार्मिक और कला चेतना की प्रभावी अभिव्यक्ति हैं। दोनों चित्रों में नृत्य मुद्राओं का चित्रण सौंदर्य दृष्टि, सांस्कृतिक मूल्यों और कला परंपराओं को व्यक्त करता है। अध्ययन ने पाया कि राजस्थानी चित्रकला में नृत्य मुद्राएँ अधिक गतिशील, ऊर्जावान और अलंकृत रूप में दिखाई दी हैं। कलाकारों ने यहाँ नृत्य को वैभव और सांस्कृतिक समृद्धि के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हुए राजसी जीवन, उत्सवों, संगीत समारोहों और दरबारी संस्कृति को चित्रित किया है। नर्तकियों की मुद्राएं स्पष्ट, संतुलित और लयात्मक हैं, जो कथक और अन्य शास्त्रीय नृत्य की विशेषताओं से मिलती हैं। इन नृत्य दृश्यों को सशक्त रेखांकन, चमकीले रंगों और अलंकृत वेशभूषा ने और अधिक प्रभावशाली बनाया है।

नृत्य मुद्राएँ, दूसरी ओर, पहाड़ी चित्रकला में भावात्मक, कोमल और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति से भरपूर दिखाई देती हैं। कलाकारों ने कांगड़ा, गुलेर, बसोहली तथा चंबा जैसी उपशैलियों में नृत्य को प्रेम, भक्ति तथा प्रकृति के सौंदर्य से जोड़कर चित्रित किया है। राधा–कृष्ण लीला, रास–नृत्य तथा भक्ति विषयक चित्रों में नृत्य मुद्राएँ भावनात्मक अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनती हैं। इन चित्रों की प्राकृतिक शैली, हल्की रंग योजना और हल्की रेखांकन ने उनकी अलग कलाकृति दी है।

तुलनात्मक विश्लेषण ने दिखाया कि दोनों चित्रशैलियों में भारतीय नाट्यशास्त्रीय परंपरा, भक्ति आंदोलन और शास्त्रीय नृत्य के गुण हैं। दोनों परंपराओं में हस्त मुद्राएँ, शरीर की भंगिमाएँ, मुखाभिव्यक्तियाँ और लयात्मक संरचना दिखाई देती हैं। दोनों का मूल सांस्कृतिक आधार एक है, हालांकि शैलीगत रूप से वे अलग हैं। राजस्थानी चित्रकला शक्ति, गति और वैभव को दिखाती है, लेकिन पहाड़ी चित्रकला भावना, शान्ति और आध्यात्मिकता को अधिक महत्व देती है।

अध्ययनों से भी पता चलता है कि नृत्य और चित्रकला दोनों भारतीय संस्कृति में परस्पर पूरक कलाएँ हैं। चित्रकारों ने नृत्य की क्षणिक गतियों और भावों को स्थायी रूप देकर तत्कालीन नृत्य परंपराओं को बचाया है। इस दृष्टिकोण से राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला को भारत की सांस्कृतिक विरासत और नृत्य इतिहास का महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जा सकता है।

अंततः, राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में नृत्य मुद्राओं का अध्ययन भारतीय कला इतिहास, नृत्य अध्ययन और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में बहुत महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन दोनों चित्रशैलियों की खासियतों को भी बताता है और भारतीय दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कलाओं के बीच संबंधों को भी बताता है। साथ ही, यह भविष्य के शोधकर्ताओं को भारतीय चित्रकला, नृत्यशास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में नई खोजों के लिए भी प्रोत्साहित करता है।

12. सुझाव

निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं, जो प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों के आधार पर भारतीय चित्रकला, नृत्य अध्ययन और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के क्षेत्र में उपयोगी हो सकते हैं।

पहले, राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में चित्रित नृत्य मुद्राओं का व्यवस्थित प्रलेखन और डिजिटलीकरण होना चाहिए। वर्तमान समय में बहुत से दुर्लभ लघुचित्र निजी संग्रहालयों और संग्रहालयों में सुरक्षित हैंय इनका वैज्ञानिक अध्ययन और डिजिटल अभिलेखीकरण भारत की सांस्कृतिक विरासत को बचाने में मदद कर सकता है।

दूसरे, कला इतिहास, नृत्यशास्त्र और सांस्कृतिक अध्ययन के शोधकर्ताओं को अंतःविषयक (Interdisciplinary) शोध करना चाहिए। नृत्य मुद्राओं का अध्ययन केवल चित्रकला में ही नहीं, बल्कि भारतीय शास्त्रीय नृत्य, खासकर कथक तथा रास परंपरा में भी होना चाहिए।

तीसरे, भारतीय लघुचित्रकला और प्रदर्शनकारी कलाओं के संबंधों पर विशेष पाठ्यक्रम और शोध कार्यक्रम बनाए जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों और शोधार्थियों में भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की जागरूकता और दिलचस्पी बढ़ेगी।

चौथे, नृत्य और चित्रकला पर आधारित प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों को संग्रहालयों, कला दीर्घाओं और सांस्कृतिक संस्थानों द्वारा आयोजित किया जाना चाहिए। इससे आम जनता को भारतीय कला परंपराओं का व्यापक ज्ञान मिलेगा।

पाँचवें, अन्य भारतीय चित्रकला शैलियों, जैसे मुगल, दक्कनी और पटकथा परंपराओं के साथ भी राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला में शामिल नृत्य तत्वों का विश्लेषण किया जाना चाहिए। इससे नृत्य के विकास और उसके विविध स्वरूपों की व्यापक समझ विकसित होगी।

अंततः, भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए, कला और नृत्य के पारंपरिक ज्ञान को नवीनतम प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ना चाहिए। इससे न केवल इन कलाओं को बचाया जा सकेगा, बल्कि नई पीढ़ी को भी उनकी जानकारी मिलेगी। इस तरह, प्रस्तुत अध्ययन कला शिक्षा, सांस्कृतिक संरक्षण और शोध के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. आर्चर, डब्ल्यू. जी. (1973). इंडियन पेंटिंग्स फ्रॉम द पंजाब हिल्सःए सर्वे एंड हिस्ट्री ऑफ पहाड़ी मिनिएचर पेंटिंग (खंड 1-2). लंदनः सोथेबी पार्के बर्नेट.
2. आर्चर, डब्ल्यू. जी. (1959). इंडियन पेंटिंग एट बूंदी एंड कोटा. लंदनः विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूजियम.
3. आनंद, कृष्ण. (1963). मालवा पेंटिंग. वाराणसीः भारत कला भवन.
4. ऐटकन, एम. (2010). द इंटेलिजेंस ऑफ ट्रेडिशन इन राजपूत कोर्ट पेंटिंग. न्यू हेवनः येल यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. बीच, एम. सी. (1992). मुगल एंड राजपूत पेंटिंग. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
6. बीच, एम. सी. (1974). राजपूत पेंटिंग्स एट बूंदी एंड कोटा. एस्कोनाः आर्टिबस एशिए.
7. बैरेट, डी., एवं ग्रे, बी. (1963). पेंटिंग ऑफ इंडिया. जेनेवाः स्किरा पब्लिकेशन्स.
8. ब्राउन, पी. (1918). इंडियन पेंटिंग. कोलकाताः एसोसिएशन प्रेस.
9. चक्रवर्ती, अंजन. (2005). इंडियन मिनिएचर पेंटिंग. नई दिल्लीः रोली बुक्स.
10. क्रेवन, आर., एवं रॉय, सी. (संपा.). (1990). रामायणः पहाड़ी पेंटिंग्स. मुंबईः मार्ग पब्लिकेशन्स.
11. क्रिल, आर. (1999). मारवाड़ पेंटिंगः ए हिस्ट्री ऑफ द जोधपुर स्टाइल. मुंबईः इंडिया बुक हाउस.
12. कुमारस्वामी, ए. के. (1916). राजपूत पेंटिंग. लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

13. गोस्वामी, बी. एन., एवं फिशर, ई. (1992). पहाड़ी मास्टर्सः कोर्ट पेंटर्स ऑफ नॉर्दर्न इंडिया. ज्यूरिखः म्यूजियम रिटबर्ग.
14. गोस्वामी, बी. एन., एवं फिशर, ई. (1997). पहाड़ी मास्टर्स. नई दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
15. कोसाक, एस. (1997). इंडियन कोर्ट पेंटिंगः 16वीं–19वीं शताब्दी. न्यूयॉकर्रू मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट.
16. लॉस्टी, जे. पी. (1982). द आर्ट ऑफ द बुक इन इंडिया. लंदनः ब्रिटिश लाइब्रेरी.
17. मिटर, पी. (2001). इंडियन आर्ट. ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
18. मैकइनरनी, टी. (2016). डिवाइन प्लेजर्सः पेंटिंग्स फ्रॉम इंडियाज राजपूत कोर्ट्स. न्यूयॉर्कः मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट.
19. पाल, पी. (1978). द क्लासिकल ट्रेडिशन इन राजपूत पेंटिंग. न्यूयॉर्कः पियरपॉण्ट मॉर्गन लाइब्रेरी.
20. रंधावा, एम. एस. (1959). बसोहली पेंटिंग. नई दिल्लीः प्रकाशन विभाग, भारत सरकार.
21. रंधावा, एम. एस. (1960). कांगड़ा पेंटिंग्स ऑफ द भागवत पुराण. नई दिल्लीः राष्ट्रीय संग्रहालय.
22. रंधावा, एम. एस. (1962). कांगड़ा पेंटिंग्स ऑन लव. नई दिल्लीः राष्ट्रीय संग्रहालय.
23. रंधावा, एम. एस. (1971). कांगड़ा रागमाला पेंटिंग्स. नई दिल्लीः राष्ट्रीय संग्रहालय.
24. सेयलर, जे., एवं मित्तल, जे. (2014). पहाड़ी पेंटिंग्स इन द जगदीश एंड कमला मित्तल म्यूजियम ऑफ इंडियन आर्ट. हैदराबादः जगदीश एंड कमला मित्तल संग्रहालय.
25. सिंह, कविता. (संपा.). (2015). राजपूत पेंटिंगः कला, संस्कृति और परंपरा. नई दिल्लीः जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय प्रकाशन.